शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गोविन्द चातक के 'बाँसुरी बजती रही' नाटक में लोक तत्व

कल्पना वर्मा
वसंत कुंज
नई दिल्ली, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय साहित्य में लोक साहित्य अपना विशिष्ट स्थान रखता है। लोक साहित्य गद्यात्मक और पद्यात्मक रूप में सामूहिक जीवन पद्धति को प्रकट करता है। जनरुचि का साहित्य होने के कारण इसकी कोई निश्चित भाव भाषा नहीं होती। लोक साहित्य हमारे पूर्वजों की हमें दी गई एक अनुपम विरासत है। जिसे हमें सहेज कर आने वाली पीढ़ी को देना है। गोविन्द चातक द्वारा रचित 'बांसुरी बजती रही गुजरात की लोक कथा पर आधारित नाटक है। इसमें नायिका के माध्यम से स्त्री हृदय की चेष्टा, राग विराग को दर्शाया गया है। नायक प्रेमी है और वह हृदयस्पर्शी पात्र है। दोनों की चेतना का प्रभाव उन्हें कभी दूर तो कभी बहुत निकट लाता है।यह लोक कथा पिता-पुत्री के प्रेम व जीवन की पीड़ा को यह दिखाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'बाँसुरी बजती रही लोक नाट्य का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

लोक साहित्य हमारी संस्कृति, सभ्यता, परंपराओं का संरक्षक है। यह वाचिक परम्परा में विरासत को संजो कर रखता है। एक कंठ से दूसरे कंठ तक होती हुई लोक साहित्य की धरा अनवरत प्रवाहित होती रहती है। प्राचीन काल में जब तक लेखनी की परंपरा विकसित नहीं हुई थी, उस समय इन कथाओं को मौखिक आल्हा तथा बरसात के दिनों में शाम के समय गांव देहात के लोग एक जगह इकट्ठा होकर गाते थे। यही मनोरंजन का एक मात्र साधन था। इन्हीं कथाओं के में लोग संस्कृति, परंपरा, खानपान, शिक्षा, रीति-रिवाजों को पहचान कर अपने जीवन को सहज और स्वाभाविक रूप से जोड़कर चलते थे। 'ऋग्वेद' में 'लोक' शब्द का प्रयोग जन के पर्यायवाची शब्द के रूप में किया गया है। 'भरतमुनि' के नाट्य शास्त्र में भी 'लोक' शब्द को देखा जा सकता है। पाणिनी, पतंजलि, वररुचि ने भी अपने काव्य में 'लोक' शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में किया है। हिंदी साहित्य में 'लोक' शब्द का प्रयोग सामान्य जन अर्थात सामान्य लोगों का साहित्य के रूप में किया जाता है। हिंदी साहित्य के वीरगाथा काल में इसके स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। वीरगाथा काल का साहित्य लोक साहित्य से ही अस्तित्व में आया है।

डॉ. सत्येंद्र के अनुसार, "लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार शास्त्रीय था। और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है।"

सामान्य लोक साहित्य दो रूपों में प्रचलित है।
1- शिष्ट साहित्य 2- लोक साहित्य

भारत में सामान्य लोक साहित्य को भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है। महाराष्ट्र में पाँवड़ा, गुजरात में कथा गीत तथा राजस्थान में गीत कथा। इन लोक कथाओं में प्रेम तत्व प्रमुख होता है। प्रेम को पाने के लिए नायक प्राणों की आहुति

तक देने को तैयार रहता है। संगीतात्मकता लोक कथाओं का अनिवार्य तत्व होता है। प्रेम के सूक्ष्म भाव व प्रेम पीड़ा को उच्च गायन के साथ उच्च कोटि पर पहुंचाना इन कथा गायकों का कार्य होता है। यह कथाएं जन सामान्य की ऐसी संपत्ति होती है, जिनको सुनाने वाले गायक मनमाने ढंग से जन रूचि को देखकर फेरबदल करते रहते हैं। साधारण जन इनमें स्वयं को खोकर सब कुछ पा लेते है। लोक कथाएं तबले व ढोल की थाप पर गायकों द्वारा मंगलाचार कर अपने सभी देवी देवताओं की उपासना से प्रारंभ होती हैं। ढोली, कथा गायक तथा जन समूह सब एकाकार होकर नृत्य करते हैं। कथा आगे बढ़ती रहती है। यही इन लोक कथाओं को कहने का अनूठा ढंग प्रचलित है। जब से सभ्यताओ ने सभ्य होने का आवरण ओढ़ कर अभिजात्य वर्गों की उंगली पकड़कर चलना सीखा है, तब से लोक साहित्य में लोक तत्व विलुप्त होता जा रहा है।

लोक साहित्य में गढ़वाली लोक कथाओं का विशिष्ट स्थान है। गोविंद चातक को गढ़वाली लोक साहित्य के पितामह होने का श्रेय दिया जाता है। चातक जी ने अपने जीवन में लोक साहित्य और संस्कृति पर 25 से अधिक पुस्तकें लिखीं।

बाँसुरी बजती रही में लोक तत्व

गोविंद चातक जी का नाटक बांसुरी बजती रही गुजरात के प्रसिद्ध लोक कथा पर आधारित है। अपने में विलक्षण भाव को समेटे ऐसी संवेदनशील लोककथा है, जो नायक बीजानंद तथा नायिका शेणी के माध्यम से सामाजिक अलगाव से उत्पन्न होने वाली भीषण यातना, स्वप्निल, अकल्पनीय, रोमानी, भटकाव को दिखाती है। हर चरित्र में रहस्यपूर्ण बेचैनी स्वप्न जैसी है। जीवन की वास्तविकता से टकराती नजर आती है। बीजानंद-शेणी का प्रेम मांसल न होकर अध्यात्मिक है, जो देह के सभी बंधनों को तोड़ अध्यात्म के उच्च आसन पर विराजमान हो गए हैं। कथा हमें रुलाती भर नहीं, बल्कि सोचने पर मजबूर कर देती है कि मानवीय इच्छाएं किस तरह उसके प्रेम को दैहिक प्रेम मानकर उसे शर्तों की सीमाओं में बांधने का प्रयास करते हैं। कथा के चरित्र जटिल व संवेदनशील दोनों भाव को लिए हुए हैं। कथा का प्रारंभ तो पनघट की हंसी-मजाक से होता है, लेकिन सामाजिक विसंगतियों और आर्थिक विभेद से उत्पन्न स्थितियों के बीच प्रेम करना और जीवन जीना कोई सरल कार्य नहीं है।

कथा नायिका का पिता बेधाभाट है। वह कठोर बंजर भूमि के समान लगता है, किंतु उसी के आंगन में शेणी फूलों से लदी बेल के समान लगती है। जैसे जंगल की बेल स्वतंत्र होकर फलती-फूलती है। उसी प्रकार शेणी भी मुक्त होकर जीवन अपनी शर्तों पर जीना चाहती है, वह भावुक, न्यायप्रिय, स्वाभिमानी, युवती है।

बीजानंद गांव का अनाथ भोला-भाला, राग-द्वेष मुक्त, छल-कपट से दूर भावुक व्यक्ति है जिसके पास सम्मोहन का जादू लिए बांसुरी है। जब वह उसे आत्मीयता से बजाता है, तो प्रकृति भी उसके अधीन लगती है। वह समाज द्वारा दिए गए कष्टों को सहता है, किंतु अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं करता। गांव देहात में एक कहावत प्रचलित है कि कभी भी आग व फूस को एक साथ नहीं रखना चाहिए। यही गलती बेधाभाट से हो जाती है, जो जवान बेटी का पिता होते हुए राहगीर बीजानंद की बांसुरी पर मोहित हो, उसे अपने यहां जानवर चराने के लिए नौकर रख लेता है। बीजानंद की मोहिनी बांसुरी से शेणी आध्यात्मिक रूप से जुड़ जाती है। धीरे-

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

धीरे दोनों का प्यार परवान चढ़ता है। किंतु अपने अहम को सर्वोपरि मानने वाला समाज और बेधाभाट, दोनों का आध्यात्मिक प्रेम स्वीकार नहीं करते। शेणी-बीजानंद का प्यार बांसुरी की ध्वनि की अनुगूंज की तरह है, जो भी बांसुरी सुनता सभी भेद भूलकर मोहित हुए बिना नहीं रहते।

बेधाभाट, बीजानंद को शेणी से शादी करने के लिए नो चंद्र भैंस लाने की शर्त रखता है। तो वह पिता से निडर होकर कहती है, "रहने दो तुमने अपनी जाई का मोल चाहा है, बाबा लेकिन तुमने यह नहीं सोचा कि कोई भी भैस तुम्हारी बेटी का मोल नहीं हो सकती। बीजू भैंस न लाए तो खुश होना। ले आए तो अपनी गोट भरना लेकिन मैं बिकूँगी नहीं।" वह बीजानंद पर भी गुस्सा होती है, अपने प्रेम को पशु तुल्य नहीं समझने देती। बीजानंद से कहती है, "तू मुझे भी पशु समझता है, मेरा मोल चुकाएगा तू ?

प्रेम की पराकाष्ठा कथा के अंतिम भाग में प्रकट होती है, जब बीजानंद चंद्र भैंस लाकर बेधाभाट के वचन को पूरा करता है। शेणी को न पाकर उसे ढूंढने हिमालय पहुंच जाता है। जहां शेणी अपने जीवन के अंतिम समय में पहुंचकर हिमपुरुष रूप में बीजानंद बना उसे विवाह करती है तथा अपनी इच्छाओं से मुक्ति पा लेती है। मांसल प्रेम के सामने आध्यात्मिक प्रेम जीत जाता है। बीजानंद उसे उसी दुनिया में ले जाना चाहता है, जहां से उन दोनों ने एक साथ रहने के सपने देखे थे। किंतु शायद बहुत देर हो चुकी थी। बीजानंद को रोता, अकुलाता, कभी बर्फ पर आघात करता, कभी आकाश की तरफ देख मुट्ठियाँ भींचता देख दर्शक भावुक हुए बिना नहीं रह सकते। बीजानंद वहीं बैठा शेणी की इच्छा पूरी करने के लिए बांसुरी बजाता है, जो बजती रहती है। बेधा अपने झूठे अहंकार के कारण सब कुछ होते हुए भी अपनी ही शर्त के कारण हार जाता है।

निष्कर्ष

भारतीय ग्रामीण साहित्य लोक गीतों के माध्यम से ही जाना जा सकता है। आज भी ग्रामीण अंचलों में ऐसी अनेक कथाएं हैं, जिनको अपने अस्तित्व में आने की तलाश है। जिनको लोग भूल गए हैं, उनको सुनने वाले श्रोता अब आधुनिकता की खोज के पीछे टेलीविजन या फोन में व्यस्त हो कर रह गए हैं। लोककथा साहित्य पर पड़ी धूल झाड़कर उसे समाज के सामने लाने की आवश्यकता है। ये कथाएं हमारी सभ्यता की नींव हैं। गोविंद जातक के लोककथा पर आधारित इस नाटक को उत्तर प्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया है। ग्रामीण अंचलों में अब चौपाल खाली पड़ी है। इन कथाओं को सुनने और सुनाने वाला नहीं रहा। ये कथाएं हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- *गोविन्द चातक (2013), बांसुरी बजती रही तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली*
- *डॉ. सतेंद्र (1971),लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा*
- *डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय (१९५७) लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रावेट लिमिटेड, इलाहाबाद*